

اِبرای قورباغه‌های مرداب‌خوار

داستان‌های خیلی خیلی کوتاه

جواد سعیدی‌پور



انتشارات کاروان

[www.caravan.ir](http://www.caravan.ir)

|                     |                                                                             |
|---------------------|-----------------------------------------------------------------------------|
| سرشناسه             | : سعیدی پرو، جواد                                                           |
| عنوان و نام پدیدآور | : برای قورباغه‌های مرداب خوار / داستان‌های خیلی خیلی کوتاه / جواد سعیدی پرو |
| مشخصات نشر          | : تهران: کزروان، ۱۳۸۶.                                                      |
| مشخصات ظاهری        | : ۱۲۸ ص.                                                                    |
| شابک                | : 9780964017900 9780964017902                                               |
| وضعیت فهرست‌نویسی   | : فیا                                                                       |
| موضوع               | : کسبه گزایی (ادبیات) - ایران.                                              |
| موضوع               | : نثر فارسی - قرن ۱۴.                                                       |
| ودبندی کنگره        | : ۱۳۸۶ الف ۹۶۳ PIRA۰۹۶۳                                                     |
| ودبندی دیوین        | : A۸۸۶۲ فا                                                                  |
| شماره کتابشناسی ملی | : ۱۱۲۸۶۳۳                                                                   |



انتشارات کاروان

اپرای قورباغه‌های مرداب‌خوار

جواد سعیدی‌پور

(داستان‌های خیلی خیلی کوتاه)

**The Opera of Marsh-Eater Frogs**

**Javad Saeidipur**

چاپ اول: ۱۳۸۷

صفحه‌آرایی: آتلیه کاروان

طراحی جلد: پریسا تشکری

نمونه‌خوانی: سپیده شاهی

لیتوگرافی: کاروا

چاپ: کانون چاپ

تیراژ: ۳۰۰۰ نسخه

۱۴۰۰ تومان

تمام حقوق محفوظ است. هیچ بخشی از این کتاب، بدون اجازه‌ی مکتوب ناشر، قابل تکثیر یا تولید مجدد به هیچ شکلی، از جمله چاپ، فتوکپی، انتشار الکترونیکی، فیلم و صدا نیست. این اثر تحت پوشش قانون حمایت از حقوق مؤلفان و مصنفان ایران قرار دارد.

ISBN: 978-964-175-006-2

email: [info@caravan.ir](mailto:info@caravan.ir)

website: [www.caravan.ir](http://www.caravan.ir)

## فهرست:

|                                 |    |                                     |    |
|---------------------------------|----|-------------------------------------|----|
| جنگ که تمام شد.....             | ۹  | ساعت هشت.....                       | ۳۴ |
| شبکه‌های عصبی.....              | ۱۰ | مینیمال به چه درد می‌خورد؟.....     | ۳۶ |
| نردبان.....                     | ۱۱ | سه‌شنبه.....                        | ۳۷ |
| ترور.....                       | ۱۲ | تابوت‌کشی.....                      | ۳۹ |
| گلدان.....                      | ۱۳ | دنیای بی‌رحم خنده‌دار.....          | ۴۱ |
| غول پشمالو، هیولا.....          | ۱۵ | شما دست بزنید.....                  | ۴۴ |
| مکس.....                        | ۱۶ | یک استخوان برای خدا حافظی.....      | ۴۵ |
| زندگی دوباره.....               | ۱۷ | نمی‌توانی ندیده‌اش بگیری (...)      | ۴۷ |
| او نمی‌داند.....                | ۱۸ | پرونده.....                         | ۴۸ |
| خدا از ضلع شمالی.....           | ۱۹ | راه رفتن.....                       | ۴۹ |
| بازی.....                       | ۲۰ | اسباب‌بازی‌ها.....                  | ۵۰ |
| انگشتر.....                     | ۲۱ | چگونه به یک کتوله آتش (...)         | ۵۱ |
| اینجا یادم رفت.....             | ۲۲ | کوسفندی که می‌خواست.....            | ۵۳ |
| کبوتر سفید.....                 | ۲۴ | تا باران آمد و زمین را خیس کرد...۵۵ |    |
| صدای باز شدن در.....            | ۲۵ | پنجره.....                          | ۵۷ |
| مینیمال به چه درد می‌خورد؟..... | ۲۷ | سی و هشت هزار و هفتصد و سیزده.....  | ۵۸ |
| پیاده‌رو.....                   | ۲۸ | مراسم تدفین.....                    | ۶۱ |
| نصفه شبی.....                   | ۲۹ | خرزهره.....                         | ۶۲ |
| رئیس‌جمهور.....                 | ۳۰ | جاسیکاری.....                       | ۶۴ |
| درس‌هایی درباره‌ی خودکشی.....   | ۳۱ | جوب.....                            | ۶۵ |
| تا قبرستان.....                 | ۳۲ | دزدی.....                           | ۶۶ |

|          |                             |
|----------|-----------------------------|
| ۶۹.....  | کروچه‌ی خلوت                |
| ۷۰.....  | دلنگ                        |
| ۷۱.....  | دفتر شبت وقایع              |
| ۷۲.....  | بوسه وقت خواب               |
| ۷۳.....  | شغال روی میز ناهار          |
| ۷۴.....  | نقاشی موشی که با (...)      |
| ۷۵.....  | سفارش                       |
| ۷۶.....  | یک مجوز برای حمل جسد        |
| ۷۸.....  | سگ‌کشی                      |
| ۸۱.....  | داماد                       |
| ۸۲.....  | قصه‌ی خاک و کلاغ و (...)    |
| ۸۴.....  | طلاق                        |
| ۸۵.....  | ۹۳ تا گوسفند                |
| ۸۶.....  | همین چند خط                 |
| ۸۷.....  | سنگ قبر                     |
| ۸۸.....  | فضای خالی                   |
| ۸۹.....  | بازار گوسفندها              |
| ۹۰.....  | صدای تیر که شنیدی           |
| ۹۱.....  | جایزه                       |
| ۹۳.....  | پارکینگ                     |
| ۹۴.....  | پست نگهبانی                 |
| ۹۵.....  | وضعیت عادی                  |
| ۹۶.....  | بازی                        |
| ۹۷.....  | در و دیوار                  |
| ۹۸.....  | رقص                         |
| ۹۹.....  | استعفا                      |
| ۱۰۰..... | یک مکالمه‌ی تلفنی           |
| ۱۰۱..... | برش‌های سی‌ثانیه‌ای و (...) |
| ۱۰۵..... | با بوی گازوئیل پای تنور     |
| ۱۰۸..... | رئیس پاسگاه                 |
| ۱۱۰..... | اگر من یک مرد پولدار بودم   |
| ۱۱۲..... | آیه‌های یأس                 |
| ۱۱۳..... | نشسته‌ایم کنار آب           |
| ۱۱۵..... | ۱. اقیانوس ۲. اقیانوس (...) |
| ۱۱۷..... | سربخانه                     |
| ۱۱۸..... | حقوق                        |
| ۱۱۹..... | مرگ بعد از ۲۲ ساعت          |
| ۱۲۰..... | بیگ‌بنگ                     |
| ۱۲۲..... | آتش‌سوزی تدره               |
| ۱۲۳..... | جوجه‌ی یک‌روزه              |
| ۱۲۴..... | یک نگاه عاشقانه             |
| ۱۲۵..... | یخ                          |
| ۱۲۶..... | دژیان                       |